India Media Monitor

Aaj Samaj

Medical chatro ne kiya jantar mantar par pradarshan

Date: 09/08/2013 | Edition: Delhi | Page: 4 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 24 H: 15

Clip: 1 of 1

अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल सीटों को बराबर करने की मांग

मेडिकल छात्रों ने किया जंतर मंतर पर प्रदर्शन

देश में विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी के मामले को उठाने का लक्ष्य

प्रदर्शन के दौरान भीड़ पर काबू पाने के लिए पुलिस ने वाटर कैनन से पानी की बौछार

आज समाज नेटवर्क

नई दिल्ली। अंडर ग्रेजुएट एवं पोस्ट ग्रेजुएट सीटों की संख्या बराबर करने की मांग को लेकर गुरुवार को लगभग दो हजार मेडिकल छात्रों ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) एवं दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन के साथ मिलकर जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान भीड़ पर काबू पाने के लिए पार्लियामेंट पुलिस ने डॉक्टरों पर वाटर कैनन से पानी की बौछारें की, लेकिन डॉक्टर डटे रहे। देश भर में करीब दो से तीन लाख मेडिकल छात्रों ने इस अभियान को अपना समर्थन दिया है।

आईएमए के महासचिव डॉ. नरेंद्र सैनी ने कहा कि किसी भी डॉक्टर के लिए विशेषज्ञ बनने के मकसद से चिकित्सा के किसी भी क्षेत्र में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य है जिसे पूरा कर वे गाइनोकोलॉजिस्ट, न्यूरोलॉजिस्ट, सर्जन, रेडियोलॉजिस्ट आदि बन सकते हैं। देश के चिकित्सा संस्थानों में पीजी की कम सीटों के चलते आज भारत में विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी है। हलांकि भारत में सबसे अधिक संख्या में चिकित्सा संस्थान हैं, लेकिन पीजी और यूजी छात्रों के लिए आवंटित सीटों में गैर-बराबरी और साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में अनिवार्य पोस्टिंग जैसी शर्तों के चलते युवा डॉक्टर काफी प्रभावित होते हैं और वे 13 साल का लंबा कार्यकाल सिर्फ पढ़ाई करने पर ही लगाने को मजबूर हैं।

इसका अर्थ यह हुआ कि अगर हालात ऐसे ही बने रहे तो हमारी स्वास्थ्य प्रणाली भविष्य में भी इसी प्रकार जोखिम से घिरी रहेगी और आने वाले समय में वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉक्टरों/सर्जनों के सेवानिवृत होने के बाद देश में विशेषज्ञ डॉक्टरों की और भी कमी होगी। सेव द डॉक्टर अभियान के संयोजक डॉ. नवनीत मुतरेजा ने कहा कि यदि इन हालातों में बदलाव नहीं होता तो हमें आने वाले समय में दूसरे देशों से सर्जनों का आयात करना होगा। डॉ. मुतरेजा ने कहा कि फिलहाल यूजी पाठ्यक्रमों में करीब 45,600 सीटें हैं जो एमसीआई के प्रयासों से जल्द ही 50 हजार हो जाएंगी। लेकिन पीजी के लिए सिर्फ 12 हजार सीटें उपलब्ध हैं जिन्हें ज्यादातर डॉक्टर चुनना पसंद करते हैं। उधर, अमरीका जैसे विकसित देश में यूजी की सीटों की संख्या लगभग 19 हजार है और पीजी तथा फैलोशिप सीटों का आंकड़ा 32 हजार है। लगभग 80 से 90 प्रतिशत के उत्तीर्णता प्रतिशत के चलते हर साल लगभग 40 हजार डॉक्टर ग्रेजुएट बनकर निकलते हैं जो इन 12 हजार सीटों के लिए अपने ही साथ ग्रेजुएशन पूरा करने वाले तथा एक लाख से अधिक वरिष्ठ डॉक्टरों के साथ प्रतियोगिता के लिए मजबूर होते हैं।

एनईईटी के तहत आयोजित पिछली पीजी प्रवेश परीक्षा में 1,10,000 से अधिक डॉक्टरों ने इन 12 हजार सीटों के लिए परीक्षा में हिस्सा लिया। इसके अलावा एक साल तक ग्रामीण इलाकों में अनिवार्य तैनाती की शर्त ने फेरे हालात और भी बिगाड़ दिए हैं। प्रदर्शन के बाद डॉक्टरों ने अपनी मांग से संबंधित एक ज्ञापन स्वास्थ्य मंत्री को भेजा।

भीड़ को तितर-बितर करती पार्लियामेंट थाने की पुलिस। एसपी राणा